

মহাপ্রাণেরই পরশ এনেছ স্পন্দিত করি সপ্তলোক ।

নদিত করি মন্ত্রিত করি ভুলাইয়া দিয়া বিরহ শোক ॥

আলোকের দৃত বারে বারে আসে শোনাইয়া ঘায় মধুর আশ্বাসে ।

তুমি আসিয়াছ তমঃ নাশিয়াছ পূর্ব তোরণে সৃষ্টালোক ॥

তোমারি ঝৰনিতে বাজিছে তুর্য তব ঢেতনায় ছুলিছে সূর্য ।

বিকশিত হলো চেতনাজ আবর্তিয়া এ প্রজ্ঞালোক ॥

(কলিকাতা, ২৮শে জুলাই, ১৯৮৩)

তা঳ : দাদুরা

।	০	।	০														
II{	পা - ম হা	- ০	পা - প্রা	- গে	পপা	- বই	।	পা	ধা	পা	।	মা	গা	- এ	- নে	- ছ	}

I	সা	রা	- ম্প	- ০	ন্দি	- ত	ক	রি	- স	০	পা	মা	।	গা	- মো	- ০	- ক	I
---	----	----	----------	--------	------	--------	---	----	--------	---	----	----	---	----	---------	--------	--------	---

I	পা	- ন	- ০	ন্দি	- ত	ক	রি	- ম	০	প্রি	।	পা	ধা	পা	।	মা	গা	- ত	I
---	----	--------	--------	------	--------	---	----	--------	---	------	---	----	----	----	---	----	----	--------	---

I	সা	রা	- ভু	- লা	- ই	য়া	দি	য়া	বি	ৰ	হ	।	রা	পা	মা	।	গা	- শো	- ০	ক	II
---	----	----	---------	---------	--------	-----	----	-----	----	---	---	---	----	----	----	---	----	---------	--------	---	----

স্পন্দিত..... সপ্তলোক ॥

II	পা	- আ	লো	কে	- র	দৃ	ত	- বা	রে	বা	- রে	আ	সে	।	মা	গা	- রে	- আ	I
----	----	--------	----	----	--------	----	---	---------	----	----	---------	---	----	---	----	----	---------	--------	---

I	সা	রা	- শো	না	- ই	য়া	য়া	য়া	ম	ধু	র	আ	০	শ্বা	সে	।	মা	গা	- ০	I
---	----	----	---------	----	--------	-----	-----	-----	---	----	---	---	---	------	----	---	----	----	--------	---

I	পা	- তু	মি	আ	- সি	য়া	ছ	- ত	মঃ	না	- শি	য়া	ছ	।	মা	গা	- শি	- য়া	I
---	----	---------	----	---	---------	-----	---	--------	----	----	---------	-----	---	---	----	----	---------	----------	---

I সা রা -ী | রা -ী গা I রা পা মা | গা -ী -ী II
 পু র্ব তো র ণে | সু র ধা | লো র ক

স্পন্দিত সপ্তলোক ॥

॥ পা-ন-া | পা-ন-া | পা ধা পা | মা গা-
তো মা র স্ব নি তে বা জি তে তু র

I সা রা -t | রা -t গা I রা পা মা | মা গা -t I
ত ব ঢ়ো ত না য দু লি ছে শু o র্য

I পা-ন-ত | পা-ন-ৰ | পা-ধ-পা | মা-গা-ন |
বি-ক-শি-ত হ-লো চে-ত না o-o-জ

I সা রা - | রা - গা | রা পা মা | গা - - III
 আ ব ০ তি স্বা এ অ ০ জ্ঞা লো ০ ক

স্পন্দিত.....সপ্তলোক ॥